बिन अबी मुअयत।

हमने पहले ही कुरान की आयत पढ़ी है जिसमें ईमान वालों की आँख बंद करके किसी की बात मानने से मना किया गया है। 'ऐ ईमान वालों अगर कोई फासिक (बुरा आदमी) तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आता है और कहता है कि वह सच्ची है। तो तुम उसकी जाँच-पड़ताल करो बजाए इसके कि उस बात को मानों और बाद में बछताओ।

(सूरए-अल-हुजरात, आयत ६)

यह बात क़ाबिले ग़ौर (देखने वाली है) है कि एक घटना में अल-वालिद ने झूठ बोलकर लोगों को भटकानाचाहा था जिस पर यह आयत आयी थी जिसमें अल वालिद को पासिक क़रार (बताया) दिया गया था।

जैसा कि अबू अमीना, बिलाल फ़िलिप्स ने कहा है ''हमें बहुत ज़्यादा सावधानी बरतनी चाहिये जब हमें कोई ऐसा आदमीसूचना दे जिसके चरित्र के बारे में संदेह हो चाहे वह अबी तक एक गुनाहगार साबित न हुआ हो।'' हालांकि हमें सुन्नी हदीसों को एकत्र करने पर मिलते हैंरसूल के तौर - तरीके अलवालिद से मिलने के। और उदाहरणों के लिए देखिये।

अल वालिद की चरित्र हीनता एंव शैतानिया रसूल की ज़िंदगी में ख़त्म नहीं हुई थी। उस्मान ने इसको कूफे के गवर्नर बना दिया जाहँ उसकी हरकतेंचलती रही। एक दिन उसने सुबह की नमाज़ नशे की हालत में पढ़ाई और दो रक़ाअत की जगह चार रक़ाअत पढ़ाई। इस बात पर उस्मान ने उसको सज़ा दी। यह घटना बहुत मशहूर (प्रसिद्ध) है और अनगिनत किताबों में पाई जाती है। जिनमें से कुच किताबें

- सही अल-बुख़ारी (अंग्रेज़ी अनुवाद). वेलयुम ५, किताब ५७, नंबर ४५, वेलयुम ५.
- अल तबरी तारीख (अंग्रेजी अनुवाद) हिस्ट्री आफ एट तबरी, दा कराईसिस आफ दा अरली खेलीफेट). वेलयुम १५, पेज १२०.

हम क्यों नहीं माफ कर सकते हैं पुराने झगड़े भूलकर?

अगर हम अल वालिद जैसे साथियों की गलितयों को स्पष्ट करें तो इसके पीछे यह कारण नहीं है कि हम बदले की भावना रखते हैं। क्योंकि मुसलमानों को सावधानी बरतने की आवश्यक्ता है जब वह इस्लाम के कानून और रसूल की बताई बातों (सुन्नत) के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। और यह रसूल के सहाबियों की जीवन शैली का निरीक्षण करने पर प्राप्त हो सकता है। और यह अध्यन उनके साथियों के चरित्र और विश्वास की गवाही देगा। आखिरकार रसूल ने हम को चेतावनी दी है कि ''मैं हौज़े कौसर (जन्नत में कौसर नाम का तालाब) के पास आऊँगा और जो मेरे पास से निकलेगा उसे वहां का पानी पिलाऊँगा और जो एक बार पी लेगा उसे कभी प्यास नहीं लगेगी, वहाँ वह लोग आएंगे जिन्हें मैं जानता हूँ और जो मुझे जानते हैं, जो मेरे दोस्त हैं'' यहाँ पर यह सवाल उठता है जो हम पूछ सकते हैं कि ऐ रसूल आप नहीं जानते कि इन लोगों ने क्या क्या किया? इसके जवाब में रसूल कहेंगे कि वह लोग दफा हो जाए जो हमारे जाने के बाद बदल गए।

(सही अल बुखारी 'अंग्रेजी अनुवाद', वेलयूम. ८ किताब ७६ न. ५८५)

रसूल के सहाबियों के बारे में

शीया मोहब्बत करते हैं रसूल के उन सहाबियों से जिनका चरित्र अच्छा है और जिनके बारे में कुरान में तारीफें है। इस तारीफ में अल वालिद इब्ने उक़बा जैसे लोगों को शामिल नहीं किया गया जैसे कि सुन्नियों को नाक़ाबिले तारीफ (तारीफ़ के काबिल नहीं) समझते हैं। इसी लिए शीया यह नहीं मानते कि रसूल का हर सहाबी (दोस्त) चरित्रवान था बल्कि हर सहाबी की जीवन शैली के अध्यन के बाद, जिन्होने रसूल (स.अ.) की बात नहीं मानी उसे बुरा कहते है। शियों के अनसार अच्छे सहाबियों में अम्मार, मिकदाद, अबूदज़र, सलमान, जाबिर, इब्ने अब्बास थे। शीयों के चौथे इमाम हज़रत ज़ैनुलआबेदीन अलैहिस्सलाम ने रसूल के अच्छे सहाबियों की तारीफ में कहा है कि अल्लाह इनसे खुश रहे।

''ऐ अल्लाह मुहम्मद (स.अ.) के वह सहाबी जिन्होंने दोस्ती का हक़ अदा किया, रसूल की मदद करने के इम्तिहान में सफल रहे। रसूल की हर बात

को ध्यान सेसुना और माना जो अपने घर और बच्चों से दूर रहकर रसूल के साथ रहे और रसूल की मदद की, जिन्होंने अपने बेटों और अपने पिता के विरुद्ध होकर रसूल का साथ दिया और जिनके दिल में रसलू के लिए मोहब्बत थी, जो रसूल की सलामती की हमेशा दुआ करते थे, जिन्होंने अपने क़बीलों का साथ छोड़ दिया रसूल के साथ होने के लिए और अपने भाई बन्धुओं के विरुद्ध होकर रसूल के साए में आ गए, उन्हें ऐ अल्लाह खुश रखना क्योंकि उन्होंने तुम्हारिलए अपना सब कुछ छोड़कर दूसरे लोगों को भी तुम्हारी तरफ़ बुलाया और तुम्हारे रसूल के द्वारा तुम्हारे आदेश पाकर दूसरों तक भी पहुँचाए।''

(इमाम ज़ैनुल आबेदीन, सहीफए कामिला, (अंग्रेजी अनुवाद लंदन, १९८८), पृष्ठ २७)

एक दोस्त (साथी) की परिभाषाः

इब्ने हजर अल अस्क़लानी मशहूर सुन्नी शिक्षाविद रसूल (स.अ.) के सहाबी (दोस्त) को इस तरह परिभाषित करते हैं वह व्यक्ति जो रसूल से इस्लाम कुबूल करने के बाद मिला हो और इस्लाम कुबूल किए हुए ही मरा हो।

इन्होंने इस परिभाषा में यह भी कहा है कि (१) वह व्यक्ति चाहे व मुलाक़ात लम्बी हो या छोटी, (२) वह लोग जिन्होंने रसूल के तौर तरीक़े फैलाए हो और वह जिन्होंने नहीं फैलाए, (३) वह लोग जो रसूलकी तरफ से जंग में गए और वह ज नहीं गए, (४) वह लोग जिन्होंने सिर्फ रसूल को देखा हो मगर उनके सामने बैठी भीड़ से नहीं और वह लोग भी जिन्होंने रसूल को सिर्फ इसलिए नहीं देखा क्योंकि वह लोग अंधे थे। ( )

क्या सब दोस्त सही और सच्चे थे?

जितने भी सुन्नी है वह यह मानते हैं कि रसूल का हर सहाबी अच्छा और भरोसेमंद और उम्मत (मानने वाले लोग) में सबसे अच्छा था। कई सुन्नी शिक्षाविदों ने यही बात कही है। इस नज़रिये को कुबूल करना बहुत मुश्किल है। जैसे कि आप एक उदाहरण को देखें।

''अज़-ज़बैर ने मुझे बताया कि उसने एक अंसारी नाम के आदमी से झगड़ा किया है अल्लाह के रसूल के सामने जिसने जंगे बद्र में हिस्सा लिया था। यह झगड़ा एक नहर को लेकर हुआ था जिससे वह दोनो खेती के लिए पानी सींचते थे। इस पर रसूल ने कहा ''ऐ ज़बैर पहले अपना बाग़ सींचो फिर अपने पड़ोसी को भी पानी लेने दो।'' इस पर अंसारी नाराज़ हुआ और कहा ''ऐ अल्लाह के रसूल यह सिर्फ इस लिए क्योंकि वह आपका रिश्तेदार है। तब रसूल के चेहरे कारंग बदला और उन्होंने नाराज़ होकर अज़-ज़ुबैर से कहा कि तुम सिर्फ अपना खेत सींचो और फिर पानी के बहाव को रोक दो।'' इस तरह रसूल ने जुबैर को उसका पूरा हक़ दिया। इससे पहले अल्लाह के रसूल ने जो फैसला किया था। वह ज़ुबैर और अंसारी दोनों के लिए फायदेमंद था। मगर जब अंसारी ने अल्लाह के रसूल को परेशान किया तब रसूल ने ज़ुबैर को उसका पूरा हक़ देकरकानूनन सही किया। अज़ ज़ुबैर ने कहा ''अल्लाह की कसम मैं सोचता हूँ कि कुरान की यह आयत सिर्फ इसी मामले पर अल्लाह उतारी होगी कि 'बग़ैर तुम्हारे ऐ रसूल वह इंसाफ नहीं पा सकते जब तक वह अपने झगड़ों में वह तुमसे फैसला न करवाएं, चाहें वह माने या न मानें।''

सुन्नी लोगों के नज़रिये के अनुसार यह रसूल का सहाबी (दोस्त) भी चरित्रवान था ओर उसकी यह हरकत भी सही (सुन्नत) है। यह सत्य है कि हमें सुन्नी नज़रिये के मुताबिक इस आदमी को चरित्रवान मानना पड़ेगा जबकि इसने रसूल के फैसले को ठुकराया क्योंकि वह फैसला इसे नहीं पसंद था। जिसकी वजह से कुरान की एक आयत नाज़िल हुई।

बदक़िस्मती से इस्लाम के इतिहास में ऐसे बहुत से उदाहरण हैं कि लोगों ने इस्लामके कानून के खिलाफ़ जाकर रसूल को नाराज़ किया। मगर हमें सुन्नी नजिरये के मुताबिक (अनुसार) उन्हें रसूल का दोस्त मानना परड़ेगा। इस तरह का व्यवहार रसूल की ज़िंदगी में और रसूल के बाद तक जारी रही कि अपने फाएदे के लिए लोग इस्लाम के क़ानून के ख़िलाफ चले गए।

अल-वालिद बिन उक़बा

'क्या वह जो ईमान वाला है और वह जिसने अल्लाह का कानून तोड़ा है, दोनों बराबर हैं' (कुरान सूरए अल सजदाह, आयत १८) उत्तम सुन्नी शिक्षाविद के अनुसार इस आयत में ईमानवाला अली इब्ने अबितालिब (अ.स.) को कहा गया है और क़ानून तोड़ने वाला अलवालिद बिन उक़बा